प्रथम अध्याय

प्रबन्ध-काव्य की संकल्पना : प्रबुद्ध काव्य-मनीषियों की दृष्टि से

१.१. भूमिका :-

साहित्य जीवन की अनुपम अभिव्यक्ति है। जीवन और साहित्य का सम्बन्ध अटूट और अन्योन्याश्रित है। दोनों एक-दूसरे के पूरक है अतः एक प्रकार से एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व संभव नहीं है। काव्य साहित्य का एक महत्वपूर्ण और अविच्छिन्न अंग है जिसके माध्यम से साहित्यकार जीवन को रूपायित करता है। कवि परंपरित या स्वानुभूत विषय का स्वतंत्र रूप से चयन कर उसमें अपनी संवेदना का पुट देकर उसे आकर्षक और मार्मिक रूप से अभिव्यक्ति देता है। इस प्रकार काव्य बाह्य-जगत के साथ-साथ अन्तर्जगत की भव्य प्रस्तुति करता है। यही कारण है कि काव्य सदैव नूतन एवं उर्ध्वगामी प्रेरणाओं का स्रोत माना गया है।

१.२. काव्य की परिभाषा :-

काव्य को किसी निश्चित आयामों में बाँधना कठिन है। अतः आज तक इसकी कोई निश्चित सर्वसम्मत परिभाषा नहीं दी जा सकी है।

मानव जीवन के परिवर्तन की अपरिमित सँभावनाएँ हैं। समय के साथ-साथ जीवन भी नया रूप और नया परिमाण धारण करता है। साहित्य या काव्य जीवन से सम्बन्धित होने के कारण वह भी परिवर्तनशील होता है। अतः काव्य को पारिभाषित करना आसान नहीं है।

काव्यशास्त्र के आद्याचार्य भरतमुनि से लेकर रसवादी, अलंकारवादी, रीतिवादी, ध्वनिवादी आदि आचार्यों ने तथा अरस्तू-प्लेटो से लेकर लोंजाइनस, मैथ्यू आर्नाल्ड, कॉलरिज, रिचर्ड्स, इलियट आदि पाश्चात् काव्य-मीमांसकों ने भी अपने ढंग से और समयानुकूल काव्य की परिभाषाएँ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इन सब विद्वानों की अवधारणाओं के अनुसार इष्ट अर्थ से युक्त वक्र कवि-व्यापार, सबल अनुभूतियों तथा रसात्मकता से परिपूर्ण, रीति, गुण, अलंकार, रस एवं वृत्ति से समन्वित संवेगों और कल्पनाओं के माध्यम से जीवन को व्याख्यायित करने वाली कोमलकान्त मधुर पदावली काव्य है।

निष्कर्षतः काव्य उदात्त भावों की कलात्मक अभिव्यक्ति है जो मानवीय

संवेदनाओं को जगाकर जीवन का उन्नयन करने की क्षमता से सम्पन्न हो। काव्य अपनी रसात्मकता, ध्वन्यात्मकता, लयात्मकता और उक्ति-वैचित्र्य के माध्यम से मन को परितृप्त करके एवं जीवन को माधुर्य से परिप्लावित करके ब्रह्मानंद की भूमिका का निर्माण करता है।

१.३. काव्य के भेद :-

काव्य के अनेक भेद-विभेद हैं। काव्य शास्त्र के ज्ञाता एवं मर्मज्ञ अनेक विद्वानों ने अपनी-अपनी मान्यताओं के अनुसार उसके भेद-उपभेद बताये हैं।

१.३.१. भारतीय विद्वानों के मत :-

भारतीय विद्वानों के मतानुसार काव्य के प्रमुख दो भेद हैं– दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य ।[१]

श्रव्य काव्य के प्रमुख तीन भेद हैं – गद्य-काव्य, पद्य-काव्य और चम्पू-काव्य । इन में पद्य-काव्य के पुनः दो उपभेद किए गए हैं – प्रबन्ध-काव्य और मुक्तक-काव्य।

विस्तार की दृष्टि से प्रबन्ध-काव्य के दो उपभेद बनते हैं – महाकाव्य और खण्डकाव्य ।

१.३.२ पाश्चात्य विद्वानों के मत :-

पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार काव्य के दो प्रमुख भेद हैं [२]– विषयीगत (सब्जेक्टिव अर्थात् भाव प्रधान) और विषयगत (ओब्जेक्टिव अर्थात् प्रक्कथनात्मक) । पाश्चात्य साहित्य में सर विलियम हेनरी हडसन ने काव्य का वैज्ञानिक ढंग से वर्गीकरण किया है ।[३] उन्होंने समग्र काव्य को (१) विषयी प्रधान और (२) विषय प्रधान नामक वर्गों में विभक्त करने के पश्चात् विषय प्रधान काव्य को (अ) नैरेटिव और (ब) ड्रामेटिक – इन दो उपवर्गों में बाँट दिया है। इनमें नैरेटिव पोएट्री को (क) बैलड (ख) एपिक (ग) मिट्रीकल रोमांस तथा (घ) रिअलाइजम इन पोएट में पुनः विभाजित किया । यहाँ इन्होंने फिर से 'एपिक' के तीन भेद किए – (य) एपिक ऑफ ग्रोथ (र) एपिक ऑफ आर्ट तथा (ल) मॉक एपिक ।

१.४. प्रबन्ध-काव्य और मुक्तक-काव्य में अन्तर :-

	प्रबन्ध काव्य		*मुक्तक काव्य*
१.	रचना का ख्यात स्वरूप, विस्तृत कथानक, सर्गबद्धता, पात्र, रसादि तत्त्वों से आबद्ध होने के कारण इसे प्रबन्ध कहते हैं ।	१.	मुक्तक अनिबद्ध एवं स्वतंत्र पद रचना है जो केवल एक ही पद में समाप्त होता है ।
२.	प्रबन्ध की कथा प्रसिद्ध एवं व्यापक होने से उसमें पूर्वापर का सम्बन्ध बना रहता है ।	२.	मुक्तक का कलेवर अत्यंत सीमित होने के कारण पूर्व या पर प्रसंग की एक सूत्रता की आवश्यकता नहीं रहती ।
३.	कथा में घटनाक्रम शृंखलाबद्ध होने से उसमें क्रम परिवर्तन नहीं किया जा सकता ।	३.	इसका प्रत्येक पद अपने आपमें स्वतंत्र होता है अतः क्रम परिवर्तन का प्रश्न ही नहीं उठता ।
४.	इसमें मानव जीवन का विस्तृत एवं वैविध्यपूर्ण जीवनवृत्त अंकित रहने के कारण रस योजना के लिए अधिक अवकाश बना रहता है ।	४.	मुक्तक में रचना का कद लघु एवं संक्षिप्त रहने के कारण रस योजना का क्षेत्र सीमित बना रहता है ।
५.	विशाल कथा फलक तथा विविध छंद योजना के कारण पाठक अपने हृदय में धीरे-धीरे एक स्थायी भाव जागृत कर सकता है ।	५.	मार्मिकता, प्रभावोत्पादकता तथा चमत्कार क्षमता के कारण हृदय की कली कुछ देर के लिए खिल उठती है ज़रूर, किन्तु रसानुभूति को पूर्णतः परिपुष्ट करने में यह समर्थ नहीं होता ।
६.	प्रबन्धकार कथासूत्र तथा अपने उद्देश्य के साथ बँधा रहता है अतः वह बुद्धि तथा शिल्प-कौशल्य के प्रति अधिक जागृत रहता है ।	६.	इसमें कवि की वैयक्तिक अनुभूति तथा भावनाओं की प्रधानता रहती है अतः यह सिर्फ भावप्रधान काव्य मात्र बनकर रह जाता है ।

७. अपनी व्यापकता के कारण इसमें अनेक मुक्तकों का स्थान भी समाहित हो सकता है।	७. मुक्तक का कद एकदम सीमित होने से इसमें प्रबन्ध-सी व्यापकता का अभाव रहता है।
८. प्रबन्ध में मानव-जीवन की चिरन्तन भावनाओं का चित्रण मिलता है।	८. इसमें एक मात्र कवि की ही भावनाओं का परिपाक उपलब्ध है।
९. प्रबन्ध-काव्य का प्रभाव दीर्घकालीन बना रहता है।	९. मुक्तक काव्य का प्रभाव अल्प-कालीन एवं क्षणिक होता है।
१०. विस्तार के कारण इसमें निरन्तर गति की आवश्यकता बनी रहती है।	१०. काव्य एक ही पद में समाप्त हो जाता है अतः कथ्य में गतिशीलता का प्रश्न ही नहीं उठता।
११. कथा, पात्र, रसादि प्रबन्ध के प्रमुख तत्त्व हैं।	११. कथा का निर्वाह न होने के कारण इसमें प्रबन्ध जैसे तत्त्वों का महत्व ही नहीं रहता।
१२. इसमें नायक (या नायिका) का समग्र जीवनवृत्त अथवा उसका खण्ड दोनों में से कोई भी निरूपित किया जा सकता है।	१२. पात्र के अभाव में उसका खण्ड या पूरा जीवनवृत्त निरूपित नहीं किया जा सकता।
१३. मुक्तक की अपेक्षा प्रबन्ध को श्रेष्ठतम काव्य माना जाता है।	१३. संक्षिप्त काव्य-स्वरूप के कारण मुक्तक में प्रबन्ध-सी चारुता नहीं मिलती।
१४. प्रबन्ध के मुख्य तीन भेद हैं— (अ) महाकाव्य (ब) खण्ड काव्य और (क) चम्पू काव्य	१४. मुक्तक के प्रमुख दो भेद हैं— (अ) पाठ्य मुक्तक और (ब) गेय मुक्तक

१.५. प्रबन्ध-काव्य के भेद : महाकाव्य और खण्डकाव्य

काव्य के भेद के समान प्रबन्ध-काव्य के भेद का प्रश्न भी विवादास्पद रहा है। भारतीय तथा पाश्चात्य के विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने मतानुसार इसे विभाजित करने का प्रयास किया है। जो इस प्रकार है

१.५.१. भारतीय विद्वानों का दृष्टिकोण :-

प्राचीनाचार्यों में सबसे पहले आ. विश्वनाथ ने प्रबन्ध के तीन भेद बताये हैं – (१) महाकाव्य (२) काव्य और (३) खण्ड काव्य।[४]

आधुनिक हिन्दी के प्रमुख विद्वानों में पं. सीताराम चतुर्वेदी ने शैली के आधार पर प्रबन्ध-काव्यों का नूतन वर्गीकरण प्रस्तुत किया है–

(१) महाकाव्य (२) खण्डकाव्य (३) एकार्थक काव्य (४) गीति कथा (५) मुक्तक प्रबन्ध (६) नाट्य-प्रगीत और (७) आत्म चरितात्मक काव्य।[५]

डॉ. भगीरथ मिश्र तथा डॉ. बलभद्र तिवारी ने विषयवस्तु तथा शैली के आधार पर प्रबन्ध के छः भेद किए हैं – (१) पुराण (२) आख्यान (३) महाकाव्य (४) चरित् काव्य (५) कथा काव्य और (६) लीला काव्य। इसके उपरान्त इन्होंने खण्डकाव्य के भी दो उपभेद – संघात और एकार्थ काव्य माने हैं।[६]

बाबू गुलाबराय[७] तथा अधिकांश विद्वान प्रबन्ध-काव्य के दो ही भेद मानते हैं – (१) महाकाव्य और (२) खण्डकाव्य। हिन्दी में यह वर्गीकरण सर्वाधिक प्रचलित रहा है। डॉ. शम्भूनाथ सिंह ने प्रबन्ध के भेद के अन्तर्गत महाकाव्य के भेदोपभेद का वर्गीकरण वैज्ञानिक ढंग से किया है, जिसमें उन्होंने विश्व के लगभग सभी महाकाव्यों को निम्न कोटियों में वर्गीकृत किया है।[८]
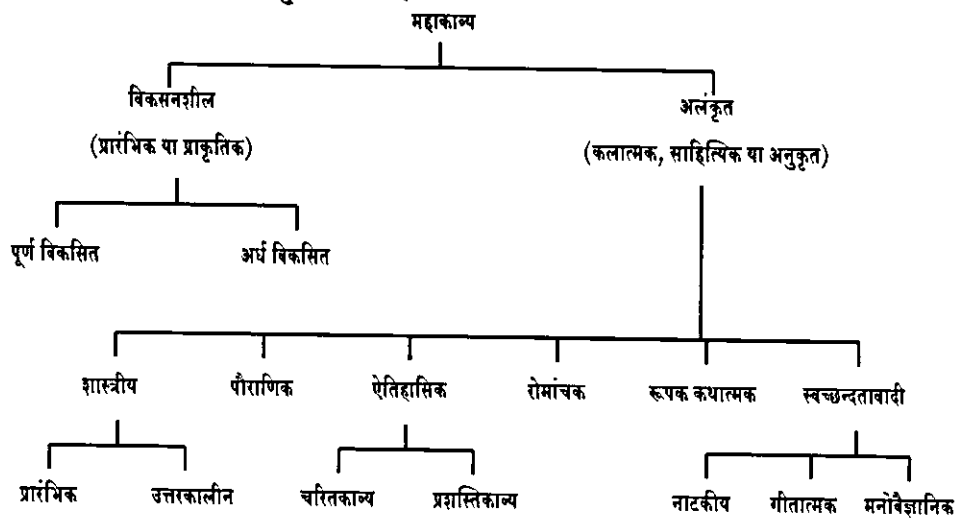
डॉ. शकुंतला दुबे ने खण्डकाव्यों को दो प्रमुख रूपों में विभाजित किया हैं – (१) लोक से उद्‌भूत लोकरंजन के लिए निर्मित और (२) देशी या विदेशी काव्य-परंपरा से उद्‌भूत साहित्य-मर्मज्ञ सहृदय के लिए निर्मित।[1]

डॉ. शिवप्रसाद गोयल ने भी खण्डकाव्यों को मुख्य चार भागों में विभक्त करके पुनः अनेक उपभेदों में वैज्ञानिक ढंग से बाँट दिया हैं।[11] उनके मतानुसार खण्डकाव्यों का पूरा वर्गीकरण इस प्रकार बनता है–
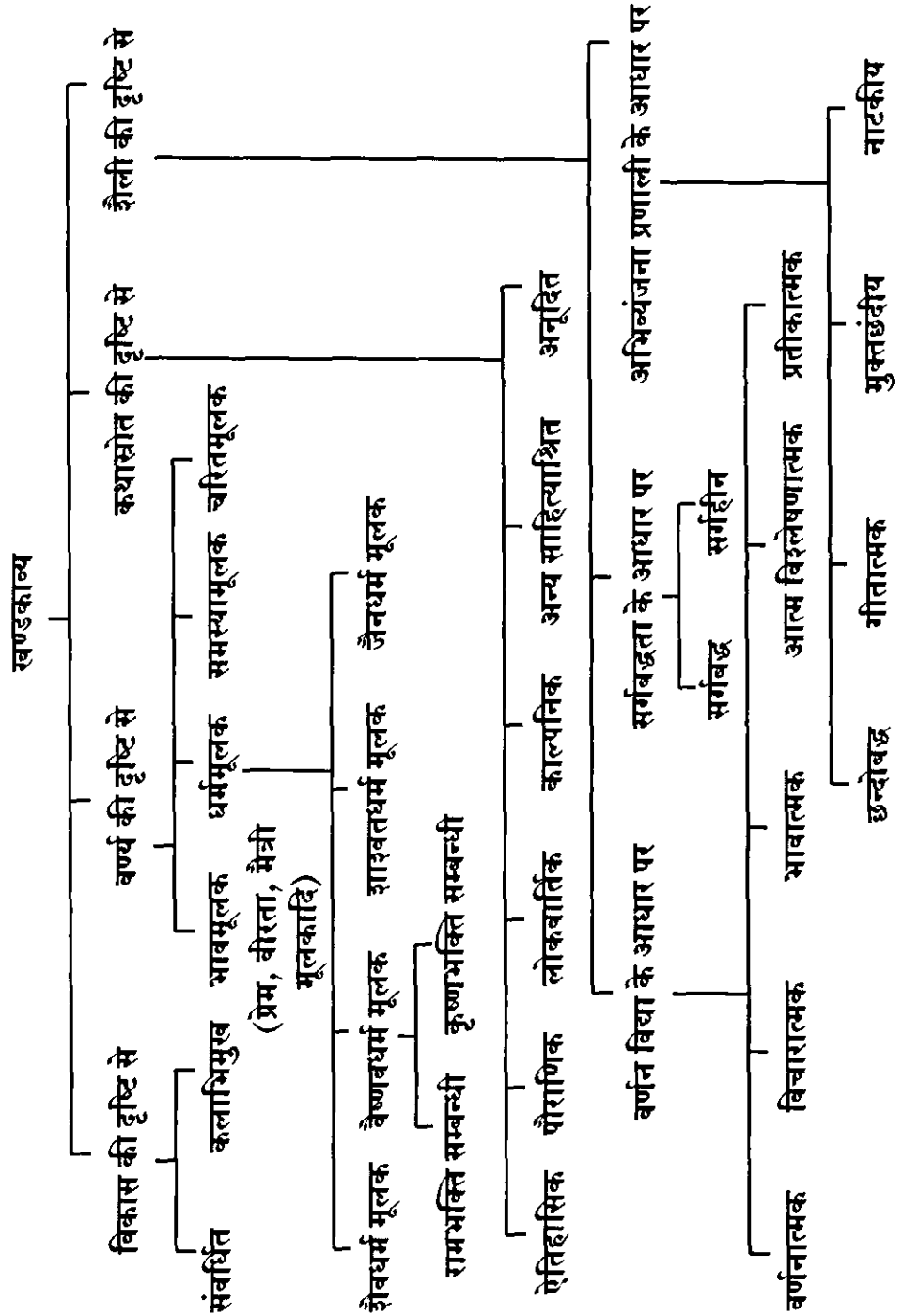
१.५.२. पाश्चात्य विद्वानों का दृष्टिकोण :

अरस्तू ने त्रासदी विषयक चिंतन से प्रभावित होकर महाकाव्यों को चार हिस्सों में बाँट दिया है – सरल, जटिल, नैतिक तथा करुण ।[११]

पाश्चात्य विद्वान हड्सन ने प्रबन्ध -काव्य (Narrative Poetry) को चार भागों में विभक्त किया हैं – [१२] (१) वीरगीत (Ballad) (२) महाकाव्य (Epic) (३) छंदबद्ध रोमांस (Metrical Rommance) और (४) यथार्थवादी काव्य (Realism in Poetry) । तत्पश्चात् इन्होंने 'एपिक' के तीन उपभेद भी किए हैं – (अ) एपिक ऑफ ग्रोथ (ब) एपिक ऑफ आर्ट और (क) मॉक एपिक ।

निष्कर्ष :–

मेरी दृष्टि में प्रबन्ध के मुख्य दो भेद हैं – (१) महाकाव्य और (२) खण्डकाव्य । जिनका हम साठोत्तरी प्रबन्ध-काव्यों के अध्ययन के अन्तर्गत अध्ययन करने जा रहे हैं ।

इससे पूर्व दोनों में तात्विक दृष्टिसे क्या भेद है यह जानना आवश्यक होने के कारण यहाँ पर दोनोंका सविस्तार परिचय दिया जा रहा है –

१.६. प्रबन्ध के तत्व :–

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने प्रबन्ध के प्रमुख तत्वों को पारिभाषित करने का प्रयास किया है। अतः सबसे प्रथम भारतीय विद्वानों का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं –

१.६.१. भारतीय विद्वानों का दृष्टिकोण :–

भारतीय काव्य-सिद्धान्त पर प्राचीन काल में सबसे पहला ग्रन्थ भरतमुनि का 'नाट्य-शास्त्र' ही उपलब्ध है। इसमें उन्होंने नाटक के प्रमुख तीन तत्वों – (१) वस्तु (२) नेता और (३) रस - का उल्लेख किया है ।

आधुनिक हिन्दी के प्रखर मनीषी आ.रामचन्द्र शुक्लजी ने प्रबन्ध को दो पक्षों में विभाजित किया है –(१) इतिवृत्तात्मक और (२) रसात्मक ।[१३] इसमें इतिवृत्तात्मकता का सम्बन्ध वस्तु या कथावस्तु से है।

आ.नंददुलारे बाजपेयी ने महाकाव्य के तीन मुख्य लक्षण माने हैं ।[१४]

हिन्दी जगत के प्रसिद्ध विद्वान डॉ.शम्भूनाथ सिंह के मतानुसार प्रबन्ध के प्रमुख एवं अनिवार्य तत्वों में [१५] – (१) कथावस्तु (२) चरित्र (३) वस्तु-व्यापार (४) रस (५)

अलौकिकता (६) शैली (७) उद्‌देश्य और (८) वस्तु विवरण द्वारा पाण्डित्य प्रदर्शन आदि हैं ।डॉ. नगेन्द्र के मतानुसार महाकाव्य के मूल तत्व हैं – उदात्त कथानक, उदात्त कार्य अथवा उद्देश्य, उदात्त चरित्र, उदात्त भाव, उदात्त शैली इत्यादि ।[१६]

१.६.२. पाश्चात्य विद्वानों का दृष्टिकोण :–

अरस्तू ने अपने 'काव्यशास्त्र' में निम्नांकित प्रमुख तत्वों का उल्लेख किया है (१) कथावस्तु (२) चरित्र (३) विचार तत्व और (४) पदावली ।[१७]

अन्य पाश्चात्य विद्वानों में डब्ल्यू.पी.केर की दृष्टि से महाकाव्य महान तथा कठोर,[१८] हीगेल की दृष्टि से ऐतिहासिक तथा सार्वभौम व्यापक,[१९] एबरक्रोम्बी की दृष्टि से शैली प्रधान[२०] तथा प्रो. टिलियार्ड[२१] की दृष्टि से सर्वोत्तम गुण प्रधान एवं भव्य है।

निष्कर्षतः उपर्युक्त दोनों मतों के विद्वानों की दृष्टि से महाकाव्य के प्रमुख तत्वों में कोई विशेष अन्तर दृष्टव्य नहीं है । दोनों देशों के प्रारंभिक महाकाव्यों में भावपक्ष एवं कलापक्ष सम्बन्धी समानता एकरूप-सी देखी जा सकती है ।अतः मेरी दृष्टि से भारतीय एवं पाश्चात्य महाकाव्य के प्रमुख तत्व ये हैं – (१) कथावस्तु (२) चरित्र (३) रस (४) शैली और (५) उद्‌देश्य ।

१.७. महाकाव्य का स्वरूप :–

व्युत्पत्ति :–

'महाकाव्य' शब्द एक पद है, जो 'महत्' और 'काव्य'– इन दो शब्दों के मेल से बना है, जिसका अर्थ है – महान कार्य ।

भारतीय आचार्यों ने 'रामायण' तथा 'महाभारत' और पाश्चात्य विद्वानों ने 'इलियड' तथा 'ओडेसी' महाकाव्यों के आधार पर ही महाकाव्यों की परिभाषा निर्धारित की है।

१.७.१. महाकाव्य के स्वरूप सम्बन्धी भारतीय आचार्यों का दृष्टिकोण :–

संस्कृत-काव्य-शास्त्रियों में भामह, दण्डी, रुद्रट, विश्वनाथादि आचार्यों ने महाकाव्य के स्वरूप को निर्धारित किया है। इनमें भामह के मतानुसार बृहद सर्गबद्ध कथानक, अलंकारों से युक्त, महापुरुष का जीवन वर्णन, व्यापार वर्णन, उत्कृष्ट एवं

अर्थपूर्ण भाषा तथा नायक-वध-प्रसंग-निषेधादि विशेषताओं से परिपूर्ण होता है।[२२]

आ.दण्डी ने भी मंगलाचरण, वर्णन-वैविध्य, ऐतिहासिक कथानक, विभिन्न सर्गों में विभिन्न छंदादि का प्रयोगादि विशेषताओं का स्वीकार करके महाकाव्य का मार्ग प्रशस्त किया है।[२३]

आ.रुद्रट ने महाकाव्य के लिए महदुद्देश्य, महत् चरित्र, महत् घटना तथा समग्र जीवन के रसात्मक चित्रण पर विशेष बल देकर उत्पाद्य, अनुत्पाद्य, लघु या महान किसी भी प्रकार की कथा का चयन करने की सीमा विस्तृत कर दी है। उन्होंने महाकाव्य में अलौकिक एवं अतिप्राकृत तत्त्वों का अस्वीकार करके मनुष्यकृत असंभव या अस्वाभाविक तत्त्वों का निषेध किया है।[२४]

आ.विश्वनाथ ने अपने पूर्ववर्ती सभी काव्याचार्यों के लक्षणों के आधार पर एक नयी सर्वव्यापक एवं सर्वमान्य स्पष्ट परिभाषा अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'साहित्य दर्पण' में प्रस्तुत की है।[२५]

(१) कथानक सर्गबद्ध। सर्ग संख्या अष्टाधिक तथा सर्गान्त में छन्द परिवर्तन के पश्चात् आगे की कथा की सूचना।

(२) नायक देवता या सद्वंशोत्पन्न धीरोदात्त गुण युक्त क्षत्रिय होना चाहिए। इसमें एक वंश के अनेक राजा या अनेक कुलीन राजा भी नायक हो सकते हैं।

(३) श्रृंगार, वीर और शान्त रसों में से किसी एक रस की प्रधानता और शेष सभी रस सहायक रूप में प्रयोजित।

(४) नाटक की पाँचों सन्धियों का निर्वाह।

(५) ऐतिहासिक अथवा किसी सज्जन से सम्बद्ध कथानक।

(६) चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) में से किसी एक की सिद्धि का लक्ष्य।

(७) सज्जन की स्तुति एवं दुर्जन की निन्दा।

(८) संध्या, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, अन्धकार, प्रातः, मध्याह्न, मृगया, पर्वत, ऋतु, सागर, संयोग, वियोग, मुनि, स्वर्ग, नगर, युद्ध, यात्रा, विवाह, मंत्रणा इत्यादि का यथायोग्य सांगोपांग वर्णन।

(९) कवि, नायक अथवा कथावस्तु के आधार पर शीर्षक का चयन।

(१०) वर्ण्यवस्तु के आधार पर सर्गों का नामकरण।

आ.विश्वनाथ की परिभाषा विस्तृत एवं प्रभावशाली अवश्य है, किन्तु उसमें

मौलिकता का अभाव है। आ. विश्वनाथ के पश्चात् किसी ने महाकाव्य के लक्षण सम्बन्धी परिभाषा नहीं की है अतः परवर्ती हिन्दी के विद्वानों पर इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

१.७.२. महाकाव्य के स्वरूप सम्बन्धी पाश्चात्य विचारकों का दृष्टिकोण :-

पाश्चात्य देशों में महाकाव्य के स्वरूप के सम्बन्ध में सबसे पहले अरस्तू ने अपने काव्यशास्त्र में विचार किया ।[२१] यद्यपि उन्होंने महाकाव्य के स्वरूप की कोई स्पष्ट परिभाषा प्रस्तुत नहीं की है, परंतु उनके त्रासदी, कला और साहित्य पर व्यक्त विचारों में उसकी झलक पायी जाती है। उनके मतानुसार –

(१) महाकाव्य एक प्रक्कथनात्मक रूप है जिसमें कथात्मक अनुकरण रहता है । इसकी कथा में आदि, मध्य और अंत युक्त जीवन्त विकास बना रहता है।

(२) उसमें प्रारंभ से लेकर अंत तक मात्र षट्पदी छन्द (हेक्सामीटर वर्स) का प्रयोग रहता है।

(३) कथानक का विकास त्रासदी के समान नाटकीयता से होता है।

(४) कथा का आकार बृहद होता है जिसमें अलौकिक तथा अतिप्राकृत तत्वों का निषेध करके उन्हें संभवित रूप में स्वीकार किया जाता है।

(५) वस्तु-व्यापार का विवरणात्मक वर्णन तथा जीवन के विविध आयामों का चित्रण इसका आवश्यक लक्षण है।

(६) एक व्यक्ति की पूरी जीवन-कथा अथवा एक युग के किसी काल की सभी घटनाओं की कथा अथवा एक ही महान घटना की कथा जिसके कई भाग होते हैं – को प्रस्तुत किया जाता है।

१.८. खण्डकाव्य का स्वरूप :-

प्रबन्ध-काव्य के प्रमुख दो भेद हैं – महाकाव्य और खण्डकाव्य । महाकाव्य के लक्षणों का अध्ययन करने के पश्चात् भारतीय तथा पाश्चात्य मीमांसकों के मतानुसार खण्डकाव्य के स्वरूप का अध्ययन करेंगे –

१.८.१. खण्डकाव्य के स्वरूप सम्बन्धी भारतीय विद्वानों का दृष्टिकोण :-

खण्डकाव्य आधुनिक हिन्दी की विकसनशील विधा है। किन्तु इसका बीज

प्राचीन संस्कृत के लक्षण-ग्रन्थों में उपलब्ध है। आ.रुद्रट को खण्डकाव्य का जनक माना जाता है। क्योंकि उन्होंने सर्वप्रथम अपने ग्रन्थ 'काव्यालंकार' में प्रबन्ध-काव्य को – 'महत्' एवं 'लघु' [२७] इन दो अंशों में विभक्त किया है।

आ.विश्वनाथ ने अपने ग्रन्थ 'साहित्य-दर्पण' में सर्वप्रथम खण्डकाव्य का उल्लेख किया है – 'खण्डकाव्यं भवेत्काव्य स्वैक देशानुसारि च' [२८] अर्थात् यह काव्य के एक अंश का अनुसरण करता है।

हिन्दी के प्रसिद्ध विद्धान डॉ.गुलाबराय ने खण्डकाव्य के लक्षण देते हुए कहा है – ''खण्डकाव्य में प्रबन्ध-काव्य का-सा तारतम्य रहता है, किन्तु महाकाव्य की अपेक्षा उसका क्षेत्र सीमित होता है। उसमें जीवन की वह अनेक रूपता नहीं रहती जो कि महाकाव्य में होती है।'' [२९]

डॉ.शिवप्रसाद गोयल ने अपनी परिभाषा में (१) जीवन की किसी प्रमुख घटना (२) सुसम्बद्ध शैली (३) वस्तु तथा पात्र प्रख्यात अथवा काल्पनिक (४) एक या अनेक छंदों का प्रयोग (५) गीतात्मकता (६) मुक्तछंदीय अथवा नाटकीय प्रणाली आदि तत्वों का प्रतिपादन किया है। [३०] जबकि सुप्रसिद्ध विदुषी डॉ. शकुंतला जी खण्डकाव्य का मूल तत्व तो जीवन की किसी मार्मिक एवं हृदय की घटना का प्रभावपूर्ण शैली में उद्घाटन करना मानती है । [३१]

इस प्रकार भारतीय मनीषियों ने अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार खण्डकाव्य के प्रमुख तत्वों को पारिभाषित करने का स्तुत्य प्रयास किया है।

१.८.२. खण्डकाव्य के स्वरूप सम्बन्धी पाश्चात्य विद्वानों का दृष्टिकोण :–

यद्यपि पाश्चात्य साहित्य में खण्डकाव्य के स्वरूप सम्बन्धी कोई स्पष्ट परिभाषा उपलब्ध नहीं है। इस विषय पर अरस्तू भी मौन हैं। परंतु हेनरी हड़सन ने काव्य का वर्गीकरण वैज्ञानिक ढंग से किया है जिसमें उन्होंने समग्र काव्य को 'सब्जेक्टिव' और 'ओब्जेक्टिव' नामक वर्गों में विभाजित करके 'ओब्जेक्टिव' (विषयप्रधान) काव्य को – 'नैरेटिव' और 'ड्रामेटिक' नामक दो उपवर्गों में बाँट दिया। बाद में नैरेटिव पोएट्री को 'बेलड', 'एपिक', 'मिट्रीकल रोमांस' तथा 'रिअलाइजम इन पोएट' में विभाजित करके 'एपिक' के भी तीन भेद किए – 'एपिक ऑफ ग्रोथ', 'एपिक ऑफ आर्ट' तथा

'मॉक एपिक' ।[१२]

इनमें 'मिट्रीकल रोमांस' तथा 'मॉक ऐपिक' रचनाएँ खण्डकाव्य के निकट की है। 'मिट्रीकल रोमांस' में जीवन की किसी प्रमुख घटना की झलक मिलती है। वे लिखे जाते हैं महाकाव्य की ही शैली पर किन्तु उनमें स्त्रोत, विषय तथा शैली आदि की दृष्टि से भिन्नता है ।[१३]

'मॉक एपिक' व्यंग्य-प्रधान होने से विषय का अत्यंत साधारण एवं तुच्छ होना स्वाभाविक है। महाकाव्य (एपिक) का अनुसरण करने के कारण उसकी शैली में गरिमा है ज़रूर, परंतु विषय की गरिमा का उसमें नितान्त अभाव दिखायी देता है।[१४]

इसके उपरान्त वहाँ के 'शोर्ट एपिक', 'स्टोरी पोएम', 'टेल-इन-वर्स' या 'एपिसोड़' आदि में भारतीय खण्डकाव्यों के समान बहुत सारे लक्षण पाये जाते हैं। अंततः खण्डकाव्य के स्वरूप सम्बन्धी उपर्युक्त भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के विविध मतों का अध्ययन करने के पश्चात् खण्डकाव्य के ये प्रमुख तत्त्व निर्धारित किए जा सकते हैं – (१) कथावस्तु (२) चरित्र (३) रस (४) शैली और (५) उद्देश्य।

१.८.३. निष्कर्ष :–

साहित्य, काव्य और प्रबन्ध-काव्य सम्बन्धी विभिन्न मनीषियों द्वारा प्रतिपादित मान्यताओं और अवधारणाओं की विस्तृत चर्चा के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि साहित्य का जीवन से अनवरुद्ध सम्बन्ध है। भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से प्रबन्ध-काव्य की संकल्पना करके उसके विकास, स्वरूप और भेदोपभेद सम्बन्धी अपने मतों की स्थापना करने का पुण्य प्रयास किया है, जिसके फलस्वरूप उसकी एक उज्ज्वल परंपरा की अजस्र धारा से साहित्य परिप्लावित होता आ रहा है।

प्रबन्ध-काव्य के स्वरूप, भेदोपभेदों एवं लक्षणों की विशद चर्चा करने के पीछे मेरा उद्देश्य यह रहा है कि क्या हमारे साहित्यिक मीमांसकों एवं विद्वानों द्वारा प्रस्थापित काव्यशास्त्र के सिद्धान्तों एवं प्रबन्ध-काव्य के परंपरित लक्षणों में समयोचित परिवर्तन हुआ है या नहीं और क्या आधुनिक प्रबन्धकारों की रचनाओं में इन लक्षणों का यथास्थान परिपालन हुआ है या नहीं ?

साठोत्तरी प्रबन्ध-रचनाओं के पौराणिक कथ्य और नये सन्दर्भों का अध्ययन करना मेरा शोध-विषय है। इसी उपक्रम में मैंने अनेक आधुनिक प्रबन्ध-रचनाओं का,

विशेषतः साठोत्तरी प्रबन्ध-रचनाओं का अध्ययन किया और इनकी पर्यावलोचना के उपरान्त यह निष्कर्ष पाया है कि आज का कवि प्राचीन साहित्य-सिद्धान्त-निरूपण के प्रति इतना दुराग्रहग्रस्त नहीं रहता है और न वह पूर्वप्रस्थापित नियमों की सीमा में बँधे रहना पसंद करता है।

ऐसा होना स्वाभाविक भी है। यह तो सर्वविदित है कि साहित्य जीवन का दर्पण होता है। युग, युगीन परिस्थितियों तथा जीवन से उसका अभिन्न सम्बन्ध बना रहता है। युग और जीवन की परिवर्तनशीलता सर्वस्वीकृत सत्य है। जीवन बदलता है तो साहित्य भी बदलता है। जैसे-जैसे युगीन स्थितियों में, जीवन में, समाज में परिवर्तन होता रहा साहित्य का स्वरूप तथा उसका दायरा भी साथ-साथ बदलता रहा है। स्वातंत्र्य के बाद बदलती हुई परिस्थितियों के कारण साहित्य में, उसकी भावाभिव्यंजना में, मानवीय संवेदनाओं में, मानव जीवन पद्धति, विचारधारा, सामाजिक मूल्यों, संगठन, संस्कारादि में समूचा परिवर्तन आया है। जीवन का व्यावहारिक पक्ष ही नहीं, किन्तु अस्तित्व की मूलभूत समस्याएँ ही बदल गई हैं । आज का प्रबन्ध-काव्य इन परिवर्तित संदर्भों की उपज है।

आज के साहित्य में जीवनादर्शों का, जीवन-मूल्यों का बदलाव स्पष्टतः परिलक्षित होता है। आज सामंतवादी ताकतों को जनवादी ताकतों ने परास्त कर दिया है। कार्ल मार्क्स की विचारधारा से प्रभावित साहित्य में 'आम व्यक्ति' केन्द्रीय व्यक्ति बन गया है। स्वामी विवेकानंद से लेकर गांधीजी तक के प्रबुद्ध चिंतकों एवं समाज सुधारकों के चिन्तन ने मानव-मूल्यों, संवेदनाओं तथा मानव-सोच को पर्याप्त रूप से प्रभावित किया है। अतः प्रबन्ध-काव्य के स्वरूप एवं लक्षणों में भी बदलाव आया है। आज प्रबन्ध-काव्य का सर्ग-बद्ध होना आवश्यक नहीं रहा है। नायक उच्च कुल का, राज-परिवार का, कुलीन या देवकोटि का ही हो यह ज़रूरी नहीं रहा। उसका स्थान एक साधारण आम आदमी ने ले लिया है, छंदो का स्थान अछांदस रचनाओं ने ले लिया है।

साठोत्तरी प्रबन्ध-रचनाओं के पौराणिक कथ्य में नूतन परिवर्तित सन्दर्भों को खोज़ निकालना मेरा आलोच्य विषयरहा है। अतः इन परंपरित लक्षणों में, स्वरूप में कितना और क्या परिवर्तन आ पाया है इसकी चर्चा करना मेरा प्रयास रहेगा।

पाद-टीप :–

१ काव्य के तत्व : आ. देवेन्द्र शर्मा, पृ. ७–८

२ सिद्धांत और अध्ययन : बाबू गुलाबराय, पृ. २१४

३ An introduction to the study of Literature : W.H.Hudson, P. 96-114

४ साहित्य दर्पण : आ. विश्वनाथ, अ.६, पृ.३१५–३२९

५ समीक्षा शास्त्र : पं.सीताराम चतुर्वेदी, पृ. ७९

६ काव्यांग विवेचन : डॉ. भगीरथ मिश्र तथा डॉ. बलभद्र तिवारी, पृ.१५

७ काव्य के रूप : बाबू गुलाबराय, पृ. २४

८ हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास : डॉ. शम्भूनाथ सिंह, पृ. ९३

९ काव्य रूपों के मूल स्रोत और उनका विकास : डॉ. शकुंतला दूबे, पृ.१४८

१० हिन्दी के खण्ड काव्य : डॉ. शिवकुमार गॉयल, पृ. ५२–५३

११ पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धांत : डॉ. कृष्णदेव शर्मा, पृ. २८८

१२ An introduction to the study of Literature : W.H.Hudson, P. 96

१३ जायसी ग्रन्थावली : आ. रामचन्द्र शुक्ल, भूमिका–पृ.७०

१४ आधुनिक साहित्य : आ. नन्ददुलारे बाजपेयी, पृ.१०६

१५ हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास : डॉ.शम्भूनाथ सिंह, पृ.५९-६८

१६ कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ : डॉ. नगेन्द्र, पृ.१६

१७ पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त : डॉ.कृष्णदेव शर्मा, पृ.२८५

१८ Epic & Rommance : W.P.Ker, P. 15-16

१९ Philosophy of fine arts : Hegel, IV., P.115

२० The Epic : Abercrombie, P. 41-42

२१ The English Epic and its Back ground : E.M.W., Tillyard, P. 5-12

२२ काव्यालंकार : भामह १/१९/१२३

२३ काव्यादर्श : दण्डी, परि.१, श्लोक १४-२०

२४ काव्यालंकार : रूद्रट, अ.१६, श्लोक २-१९

२५ साहित्य दर्पण : विश्वनाथ, परि.६, ३१५-३२५

२६ Aristotle's Poetics - Part III of the Epic poem : T.A. Moxon, P. 46-47

२७ काव्यालंकार : रूद्रट, अ.१६/२

२८ साहित्य दर्पण : विश्वनाथ ६/३२९

२९ काव्य के रूप : बाबू गुलाबराय, पृ. ११८

३० हिन्दी के खण्डकाव्य : डॉ. शिवकुमार गॉयल, पृ. ४४

३१ काव्य के रूपों का मूल स्रोत और उनका विकास : डॉ. शकुंतला दुबे, पृ. १४१

३२ An introduction to the study of literature : Hudson, P.96- 114

३३ Chamber's Twentieth Century Dictionary.

३४ A short Hand book of Literary Terms : George G. Loane, P. 108